

बजट और राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की अनिवार्यता

यूपीएससी प्रासंगिकता

- **सामान्य अध्ययन III:** राजकोषीय नीति, बजट विश्लेषण, ऋण स्थिरता, केंद्र-राज्य वित्त।
- **निबंध:** राजकोषीय अनुशासन और आर्थिक विकास / विकास बनाम स्थिरता।

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

- केंद्रीय बजट 2026-27 ने भारत की राजकोषीय सुदृढ़ीकरण रणनीति पर बहस को फिर से नवीनीकृत कर दिया है।
- विशेष रूप से 2047 तक विकसित भारत प्राप्त करने के उद्देश्य से महत्वाकांक्षी व्यय योजनाओं के संदर्भ में।
- साथ ही धीमी राजस्व उछाल, और बढ़ते सार्वजनिक ऋण तथा ब्याज के बोझ पर चिताओं के बीच।

पृष्ठभूमि: बजट प्राथमिकताएं और विकास रणनीति

- केंद्रीय बजट 2026-27 व्यय-आधारित विकास पर जोर देता है।
- विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बायोफार्मा, सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिजों जैसे उन्नत प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में निवेश के माध्यम से।
- ये क्षेत्र दीर्घकालिक उत्पादकता, रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- हालाँकि, मुख्य चुनौती इरादे में नहीं, बल्कि कार्यान्वयन क्षमता, राजकोषीय गुंजाइश और ऊचे ऋण स्तरों वाले पोस्ट-कोविड अर्थव्यवस्था में राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की गति में है।



व्यय संरचना में बदलाव: एक संरचनात्मक परिवर्तन

- पिछले दशक में, भारत सरकार ने व्यय का संरचनात्मक पुनर्गठन किया है:
- राजस्व व्यय कुल व्यय के 88% (2014-15) से घटकर 2026-27 (बजट अनुमान) में लगभग 77% हो गया है।
- अकेले केंद्रीय सब्सिडी में लगभग 7 प्रतिशत अंकों की गिरावट आई है।

- पूँजीगत व्यय (CapEx) में तदनुसार वृद्धि हुई है, जो उपभोग-संचालित विकास से निवेश-आधारित विकास की ओर बदलाव का संकेत देता है।
- इस बदलाव ने जीडीपी विकास को समर्थन देने में, विशेष रूप से कोविड-19 के बाद, एक प्रति-चक्रीय (counter-cyclical) भूमिका निभाई है।

हालाँकि, उभरती चिंताएं (Emerging Concerns)

IAS-PCS Institute

- पूँजीगत व्यय की वृद्धि में तेजी से गिरावट आई है:
 - 28.3% (2023-24)
 - 10.8% (2024-25)
 - 4.2% (2025-26 संशोधित अनुमान)
- 2026-27 के लिए बजट पूँजीगत व्यय वृद्धि (11.5%) नाममात्र जीडीपी वृद्धि से मुश्किल से ऊपर है।
- यह पूँजीगत व्यय को जीडीपी के लगभग 3.1% पर स्थिर रखता है।
- यह सार्वजनिक निवेश की गति की स्थिरता के बारे में चिंता पैदा करता है।



राजस्व संभावनाएं और 'उछाल' की चुनौती

- हालांकि 2026-27 के लिए कर राजस्व अनुमान सतर्क और यथार्थवादी दिखते हैं, लेकिन एक बड़ा खतरा 'कर उछाल' (tax buoyancy) में गिरावट है:
 - कुल सकल कर उछाल: 0.8 (1 के बेंचमार्क से नीचे)।
 - प्रत्यक्ष कर: 1.1 की उछाल (61.2% हिस्सेदारी)।
 - अप्रत्यक्ष कर: केवल 0.3 की उछाल (38.8% हिस्सेदारी)।

जीएसटी (GST) एक कमजोर कड़ी के रूप में

- कमजोर अप्रत्यक्ष कर उछाल का प्राथमिक कारण जीएसटी संग्रह है, जो जीडीपी विकास के साथ तालमेल नहीं रख पा रहा है।
- विकास और कल्याणकारी खर्चों की बढ़ती मांगों को देखते हुए, इनके लिए मजबूत तर्क हैं:
 - जीएसटी स्लैब को तर्कसंगत बनाना।
 - अनुपालन (compliance) में होने वाली कमियों को दूर करना।

- जीएसटी राजस्व उत्पादकता को बढ़ाना।

वित्त आयोग हस्तांतरण और संघीय चिताएं

- **सोलहवां वित्त आयोग (FC16):**
 - विभाज्य पूल में राज्यों की हिस्सेदारी 41% पर बरकरार रखी।
 - राजस्व घाटा अनुदान या क्षेत्र/राज्य-विशिष्ट अनुदान की सिफारिश नहीं की।
- **निहितार्थ:**
 - राज्यों को कुल हस्तांतरण में गिरावट आई है।
 - कुल वित्त आयोग अनुदान जीडीपी के 0.43% (2025-26) से गिरकर 0.33% (2026-27) हो गया।
 - यह असामान्य है, क्योंकि वित्त आयोग चक्र के पहले वर्ष में आमतौर पर अनुदान में उछाल देखा जाता है।
 - यह राज्य-स्तरीय पूँजीगत व्यय को सीमित कर सकता है, जिससे समग्र विकास प्रभावित होगा।



राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की धीमी गति

- एक प्रमुख चिता राजकोषीय घाटे में कमी की प्रगतिशील मंदी है:
 - वर्ष 2024-25: 0.7% की कमी।
 - वर्ष 2025-26 (RE): 0.4% की कमी।
 - वर्ष 2026-27 (BE): 0.1% की कमी।

ऋण लक्ष्यीकरण की ओर बदलाव (Shift to Debt Targeting)

- राजकोषीय घाटा लक्ष्यीकरण से ऋण-जीडीपी अनुपात लक्ष्यीकरण की ओर कदम पारदर्शिता की कमी रखता है जब तक कि:
 - एक स्पष्ट 'ग्लाइड पाथ' (लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग) प्रदान न किया जाए।
 - नाममात्र जीडीपी विकास की धारणाओं को स्पष्ट रूप से न बताया जाए।
 - दोनों संकेतक आपस में जुड़े हुए हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से नहीं माना जा सकता है।

ऋण, ब्याज का बोझ और 'क्राउडिंग-आउट' जोखिम

- सरकारी ऋण पर प्रभावी ब्याज दर: 7.12% (2026-27 BE)।
- राजस्व प्राप्तियों में ब्याज भुगतान का अनुपात: 40% के करीब।
- यह क्यों मायने रखता है:
 - उच्च ब्याज बोझ प्राथमिक व्यय के लिए राजकोषीय स्थान को संकुचित करता है।
 - लगातार उच्च राजकोषीय घाटा (केंद्र + राज्यों का संयुक्त 8-9%) यह कर सकता है:
 - निजी क्षेत्र के लिए निवेश योग्य संसाधनों को कम करना।
 - निजी निवेश के 'क्राउडिंग आउट' (बाहर होने) का कारण बनना।
 - यह दीर्घकालिक विकास की संभावनाओं को कमजोर करता है।

FRBM लक्ष्य और पारदर्शिता की आवश्यकता

- राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन (FRBM) अधिनियम, 2018 अनिवार्य करता है:
 - राजकोषीय घाटा: जीडीपी का 3%।
 - ऋण-जीडीपी अनुपात: 40%।
- एक विश्वसनीय सुदृढ़ीकरण रणनीति को:
 - निर्दिष्ट करना चाहिए कि ये लक्ष्य कब प्राप्त किए जाएंगे।
 - राजकोषीय सुदृढ़ीकरण को विकास की अनिवार्यताओं के साथ संरेखित करना चाहिए।



आगे की राह (Way Forward)

- कर उछाल बहाल करें, विशेष रूप से जीएसटी में।
- उत्पादक पूँजीगत व्यय की रक्षा करें और उसे प्राथमिकता दें।
- ऋण और घाटे के लिए एक पारदर्शी राजकोषीय 'ग्लाइड पाथ' प्रदान करें।
- मैक्रो-राजकोषीय स्थिरता के साथ कल्याणकारी प्रतिबद्धताओं को संतुलित करें।
- केंद्र-राज्य राजकोषीय समन्वय को मजबूत करें।

निष्कर्ष

- केंद्रीय बजट 2026-27 भारत की विकास यात्रा के लिए एक महत्वाकांक्षी रोडमैप तैयार करता है।
- हालाँकि, निरंतर विकास के लिए राजकोषीय विश्वसनीयता की आवश्यकता होती है, न कि केवल व्यय विस्तार की।
- व्यापक आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने और विकसित भारत 2047 की राह पर निजी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए राजकोषीय सुदृढ़ीकरण के प्रति एक पुनर्गठित और पारदर्शी दृष्टिकोण आवश्यक है।

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा के लिए प्रमुख शब्द

1. **राजकोषीय सुदृढ़ीकरण:** व्यय के युक्तिकरण और राजस्व वृद्धि के माध्यम से राजकोषीय घाटे और सार्वजनिक ऋण को कम करने के उद्देश्य से एक नीतिगत प्रक्रिया।
2. **पूंजीगत व्यय (CapEx):** बुनियादी ढांचे, सड़कों, रेलवे और डिजिटल प्रणालियों जैसी संपत्ति निर्माण पर सरकारी खर्च, जो उत्पादक क्षमता को बढ़ाता है।
3. **राजस्व व्यय:** सरकार के दिन-प्रतिदिन के कामकाज पर होने वाला खर्च, जिसमें वेतन, सब्सिडी, पेंशन और ब्याज भुगतान शामिल हैं।
4. **कर उछाल (Tax Buoyancy):** जीडीपी विकास के प्रति कर राजस्व विकास की संवेदनशीलता को मापता है।
 - a. **उछाल > 1 :** कर जीडीपी से तेज बढ़ते हैं।
 - b. **उछाल < 1 :** कर जीडीपी विकास से पीछे रह जाते हैं।
5. **सकल कर राजस्व:** राज्यों को हस्तांतरण से पहले केंद्र द्वारा एकत्र किया गया कुल कर राजस्व।
6. **वस्तु एवं सेवा कर (GST):** वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति पर लगाया जाने वाला गंतव्य-आधारित अप्रत्यक्ष कर।
7. **करों का विभाज्य पूल:** केंद्रीय कर राजस्व का वह हिस्सा जिसे वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार राज्यों के साथ साझा किया जाता है।
8. **राजकोषीय घाटा:** एक वित्तीय वर्ष में कुल सरकारी व्यय का कुल प्राप्तियों (उधार को छोड़कर) पर अधिक होना।

9. **ऋण-जीडीपी अनुपात:** जीडीपी के साथ कुल सार्वजनिक ऋण का अनुपात, जो ऋण स्थिरता का संकेत देता है।

10. **ब्याज भुगतान से राजस्व प्राप्ति अनुपात:** सरकारी राजस्व के उस हिस्से को इंगित करता है जो पिछले ऋण चुकाने में उपयोग किया जाता है।

11. **क्राउडिंग आउट:** ऐसी स्थिति जहां उच्च सरकारी उधारी निजी निवेश के लिए उपलब्ध धन को कम कर देती है।

IAS-PCS Institute

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: "भारत के हालिया केंद्रीय बजट पूँजीगत व्यय-संचालित विकास की ओर बदलाव को दर्शाते हैं, फिर भी कोविड के बाद की अवधि में राजकोषीय सुदृढ़ीकरण की गति धीमी हो गई है।" इस संदर्भ में, विकास-उन्मुख सार्वजनिक खर्च और राजकोषीय अनुशासन के बीच के संतुलन (trade-off) का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। निजी निवेश को प्रभावित (crowding out) किए बिना टिकाऊ राजकोषीय सुदृढ़ीकरण सुनिश्चित करने के उपाय सुझाएं। (250 शब्द)

Result Mitra

रिजल्ट का साथी



@resultmitra



www.resultmitra.com



9235313184, 9235440806

